

## किसान से उद्यमी तक—एक कदम खाद्य प्रसंस्करण

\*अजय कुमार गुप्ता, मोहन सिंह, महेंद्र डहेरिया, कृति त्रिपाठी, खुशी चौकसे, आलोक मिश्र एवं पूर्णिमा नरवरिया  
कृषि अभियांत्रिकी महाविद्यालय, जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय (जेएनकेवीवी), जबलपुर, मध्य प्रदेश, भारत  
\*संवादी लेखक का ईमेल पता: [drakg@jnkvv.org](mailto:drakg@jnkvv.org)

**भारत** एक कृषि प्रधान देश है जहाँ बड़ी आबादी अपनी आजीविका के लिए खेती पर निर्भर है। लेकिन केवल कच्चा उत्पाद उगाना किसानों को स्थायी आय नहीं दे पाता। फसलों का प्रसंस्करण (Processing) वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से कृषि उत्पादों को बेहतर, सुरक्षित और अधिक मूल्यवान बनाया जाता है। यह कदम कृषि से उद्योग की दिशा में एक मजबूत पुल का काम करता है और ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सशक्त बनाता है।

### कृषि प्रसंस्करण: प्रगतिशील किसान की निशानी

कृषि प्रसंस्करण वह प्रक्रिया है जिससे किसान अपनी फसलों को काटने के बाद साफ करते हैं, सुखाते हैं, काटते हैं, पैक करते हैं और अन्य तरीकों से तैयार करते हैं। इसका उद्देश्य फसलों को अधिक उपयोगी, सुरक्षित और मूल्यवान बनाना होता है। इस प्रक्रिया से फसल लंबे समय तक खराब नहीं होती और उसे देश के अलग-अलग बाजारों तक पहुंचाना आसान होता है। देश में कटाई के बाद फसलों की बहुत बर्बादी होती है, जिसका निवारण कृषि प्रसंस्करण के माध्यम से संभव है।

### फसल प्रसंस्करण का महत्व

1. **किसानों की आय में वृद्धि**- प्रसंस्कृत उत्पादों के दाम हमेशा कच्चे उत्पाद से अधिक होते हैं। जैसे-मूंगफली → भुनी मूंगफली
2. **बर्बादी कम होती है**- भारत में हर साल बड़ी मात्रा में सब्जियाँ, फल और अनाज खराब हो जाते हैं। प्रसंस्करण इन्हें—सुखाने, फ्रीजिंग, पाउडर रूप में बदलकर लंबे समय तक सुरक्षित करता है।
3. **रोजगार के नए अवसर**- प्रसंस्करण इकाइयों से ग्रामीण क्षेत्रों में नए रोजगार बनते हैं। इससे गाँवों में स्वरोजगार और युवा उद्यमिता बढ़ती है।
4. **कृषि उत्पादों का मूल्य-वर्धन (Value Addition)**-

प्रसंस्करण से फसलें उपयोगी रूप में बदलती हैं। उदाहरण: हल्दी → पाउडर

5. **कृषि से उद्योग की ओर परिवर्तन**- फसल प्रसंस्करण ग्रामीण क्षेत्रों में छोटे उद्योगों की शुरुआत करता है। जब किसान अपने उत्पादों को मूल्य-वर्धित (value-added) बनाते हैं, तो वे केवल उत्पादक नहीं रहते, बल्कि उद्यमी (entrepreneur) बन जाते हैं। इससे कृषि क्षेत्र से खाद्य उद्योग की ओर एक स्वाभाविक और मजबूत परिवर्तन होता है।

### प्रसंस्करण के चरण

1. **संग्रह**- फसल को खेत से इकट्ठा करना और उचित स्थान पर लाना।
2. **छँटाई**- अच्छी और खराब गुणवत्ता वाली फसलों को अलग करना।
3. **सफाई**- धूल, मिट्टी, पत्ते या अन्य गंदगी को हटाकर फसल को साफ करना।
4. **ग्रेडिंग**- आकार, रंग और गुणवत्ता के अनुसार फसल को अलग-अलग श्रेणियों में बाँटना।
5. **मुख्य प्रसंस्करण**- कच्ची फसल को बुनियादी रूप में बदलना। जैसे- अनाज को सुखाना, छिलका हटाना
6. **द्वितीयक प्रसंस्करण**- फसल को पूरी तरह नया और उपयोगी उत्पाद बनाना। जैसे- गेहूँ → आटा



7. पैकिंग- उत्पाद को सुरक्षित रखने के लिए उचित पैक में भरना।
8. भंडारण-उत्पाद को सुरक्षित स्थान पर रखना ताकि वह खराब न हो।
- 9.परिवहन- तैयार उत्पाद को बाजार या ग्राहकों तक पहुंचाना।

#### निष्कर्ष

फसल प्रसंस्करण कृषि क्षेत्र का एक अत्यंत महत्वपूर्ण हिस्सा है, जो न केवल किसानों की आय बढ़ाने में मदद करता है बल्कि उत्पादों की गुणवत्ता, शेल्फ-लाइफ और उपयोगिता भी बढ़ाता है। प्रसंस्करण के माध्यम से कृषि उपज का सही उपयोग होता है, बर्बादी कम होती है और मूल्यवर्द्धन के कारण बाजार में बेहतर दाम प्राप्त किए जा सकते हैं। इससे ग्रामीण स्तर पर रोजगार के नए अवसर पैदा होते हैं और किसान आत्मनिर्भर बनते हैं। इसलिए, आधुनिक तकनीकों और उचित प्रबंधन के साथ फसल प्रसंस्करण को अपनाना आज की आवश्यकता है, ताकि कृषि क्षेत्र को मजबूत और लाभकारी बनाया जा सके।